6

परमेश्वर की ओर से शान्ति

(2 कुरिन्थियों 1:3-11; 7:5-16)

''परन्तु परमेश्वर ने तीतुस के आने से हम को शान्ति दी''(7:6)।

पूरी बाइबल के बड़े विषयों में से एक यह खुशखबरी है कि यीशु मसीह हमें जीवन के बोझों से छुटकारे की पेशकश करता है। नये नियम में इस संदेश की भरमार लगती है कि मसीही लोगों को ''अपने मन में विश्राम'' मिला है (तुलना मत्ती 11:28-30); जो लोग ''भारी बोझ को बांधते हैं'' (तुलना मत्ती 23:4) जिसे कोई उठा नहीं सकता। वे ऐसे विधिज्ञ हैं, जो ऐसी मांग करते हैं, जिन्हें कोई पूरा नहीं कर सकता। अन्य उनके प्रभावों में दासता के दमनकारी बोझ तले हैं, पर मसीही व्यक्ति को अपनी सबसे स्वाभाविक प्रवृत्तियों से छुड़ा लिया गया है। बोझ का यह उठाया जाना मसीहियत की खुशखबरी है।

कहानी का दूसरा पक्ष आमतौर पर मसीही व्यक्ति के लिए आश्चर्य के रूप में आता है। सक्रिय शिष्यता अत्यधिक बोझिल भी हो सकती है। हाल ही की घटना में मुझे वहां होने की बात याद है जब कलीसिया को जीवन में बहुत बोझों पर चर्चा हो रही थी। इनमें से कई पल निराश करने वाले परिणाम बन जाते हैं। अन्य घटनाओं में से ऐसे लोगों का पालन पोषण करने के बोझ जिनका समर्पण लगा नहीं कि कभी बढ़ेगा। मैंने कई सक्रिय मसीही लोगों से बात की है, जिन्होंने इस पर निराशा और नाराज़गी व्यक्त की है कि उनके ऊपर भारी बोझ है, जो उन्हें तंग कर रहा है।

अपने आप को कलीसिया को थामे हुए दिखाते समय आमतौर पर हम अपने बोझ को बढ़ा-चढ़ाकर वैसे ही दिखाते हैं जैसे यूनानी लोग संसार को थामे हुए दिखाने के लिए एटलस को दिखाते थे। कलीसिया को थामे रखने में हम कभी भी अकेले खड़े नहीं होते, चाहे हमें ऐसा लगता अवश्य है। पर कलीसिया के जीवन में भारी बोझ है। एक सबसे परेशान करने वाला पहलू यह है कि उनमें कोई राहत नहीं है। हर तरफ से परेशानियां ही आती है, जिनके साथ कई बार चेतावनी बहुत कम होती है। विचार के मतभेदों पर तनाव भी हो सकते हैं। वे प्रिय मित्रों की व्यक्तिगत समस्याओं में सहायता करते हुए शामिल हो भी सकती हैं। यह जानते हुए कि हम यूं ही पीछा नहीं छुड़ा सकते, अनुभव निढाल कर देते हैं। इस कारण कलीसिया के जीवन के बोझ आमतौर पर बढ़ जाते हैं, क्योंकि हमें अपना संघर्ष खत्म होता और अपनी सेवा से सेवानिवृत्ति का कोई कारण दिखाई नहीं देता। उन लोगों के लिए जिन्हें लगता है कि मसीही जीवन बोझ से छुटकारा है, यह आमतौर पर मोहभंग करने वाला होता है।

2 कुरिन्थियों के अनुसार वास्तविक चेला सेवा में आने वाली निराशाओं से मोहभंग नहीं होता। वह इस बात को समझता है कि ये बोझ मसीह के सेवक के पूरे ''काम'' का एक भाग है। जब पौलुस के सामने यह साबित करने की कि ''मसीह का'' (10:7) या ''मसीह'' है तो

उसने अपने परिश्रमों के बारे में बताया। उसके मन को ''चैन न'' मिला था (2:13); परेशान करने वाली कलीसिया ने उसकी रातों की नींद उड़ा दी थी। विद्रोही लोगों ने उसे दुख दिया था (2:1-4)। इसके अलावा बीमारी (12:7), थकावट और सताव के होने पर भी उसने आगे बढ़ते रहने की समस्या झेली, एक विशेष तौर पर स्पष्ट कथन में पौलुस उस सताव की बात करता है जो इतना अधिक था कि वह ''भारी बोझ से दब गया था, यहां तक कि जीवन से भी हाथ धो बैठा था'' (1:8)। यह तो ऐसा था जैसे कोई भार उसे कुचल रहा हो। पौलुस की सेवकाई से हमें बोझ के अलावा कुछ नहीं मिला था। उसके संघर्ष का अन्त होता दिखाई नहीं देता था।

2 कुरिन्थियों का आरम्भिक भाग (1:3-11) इस विषय के साथ भरपूर है। पौलुस अपनी आदत के अनुसार अपने पत्रों का आरम्भ धन्यवाद के साथ करता है जिसमें पुस्तक के मुख्य विषयों के हवाले हाते हैं (तुलना 1:8-17; 1 कुरिन्थियों 1:4)। 1 कुरिन्थियों का ''धन्यवाद'' वाला भाग यानी कष्ट के ऐसे विषय की बात करता है जो पूरी पुस्तक में हैं (1:4, 6, 8; 2:4; 4:17; 6:4; 7:4; 8:2, 13)। मसीही लोगों के कष्टों का एक हवाला भी है (1:5, 6)। इसके अलावा वह उस समय की बात करता है जब उसे लगा कि उसे ''मृत्यु का दण्ड'' (1:9) मिल गया है। इस घटना की हमें कोई जानकारी नहीं है परन्तु पौलुस इसे यहां उन बोझों को हमें याद दिलाने के लिए शामिल करता है जो मसीह का सेवक होने में उठाने पड़ते हैं। वह हमारा ध्यान मसीही जीवन के विभिन्न बोझों की ओर दिलाकर पत्री की लय बिठाता है।

मसीह की सेवा ''कुचलने वाली'' क्यों होनी चाहिए? 1:5 में पौलुस यह मानता प्रतीत होता है कि उसके पाठकों को समझ है। ''क्योंकि जैसे मसीह के दुखों में हम अधिक सहभागी होते हैं।'' मसीही जीवन के मूल तथ्य का सुझाव देता है कि यीशु ने ''क्रूस को अकेले'' नहीं सहा था। NEB में इस आयत का अनुवाद ''मसीह के दुखों का कटोरा उमडने पर, और हम उसके साथ दुख उठाते हैं ...'' उपयुक्त है। ''मसीह के दुख'' क्रूस पर चढ़ाए जाने से खत्म नहीं होगा। वे उसके लोगों के जीवनों में आ गए। यीशु ने एक बार अपने चेलों को बताया था कि उन्हें उसके पीछे चलने के लिए ''क्रूस उठाना'' पड़ेगा (मरकुस 8:34)। कई अवसरों पर पौलुस मसीह के दुखों (फिलिप्पियों 3:10) में ''संगति'' (या ''सहभागिता'') की बात स्पष्ट शब्दों में करता है। गलातियों के नाम, उसने लिखा, ''मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं'' (गलातियों 6:17)। कुलुस्सियों के नाम, उसने लिखा, ''मसीह के क्लेशों की घटी ... पूरी किए देता हूं'' (कुलुस्सियों 1:24)। इसलिए मसीह की सेवा बोझ वाली है क्योंकि मसीह के दु:ख कलीसिया में बने रहते हैं। जब हम दूसरों की पीड़ा से दबाए जाते हैं तो हम उस दुख में सहभागी हो रहे होते हैं, जिसका आरम्भ मसीह ने किया।

हम में से वे लोग जिन्हें कलीसिया के जीवन के बोझ मोह भंग करने वाले लगते हैं वे मसीह की खातिर अपने क्लेश को पौलुस की स्वीकार्यता में स्वस्थ वास्तविकता को देख सकते हैं। उसकी गतिविधि के बोझों को आनन्दपूर्ण मसीही जीवन में दुखद अवरोधों के रूप में कभी नहीं दिखाया जाता। ''सभी कलीसियाओं की चिंता'' (11:28) का दबाने वाला भार मसीही जीवन का आवश्यक भाग था जिसमें थका देने वाले बोझ भी थे। यह तथ्य हमसे यह पूछने को कहता है कि मसीही जीवन का शुभ समाचार क्या है?

हर सुख देने वाला परमेश्वर (1:3)

मसीही जीवन के पौलुस के कष्टों और बोझों के हवालों का एक शानदार तथ्य यह है कि वह 1:3-11 में निराशा के इन पलों को धन्यवाद के संदर्भ में याद करता है! वह इन पलों को हमें यह सुचित करने के लिए स्मरण नहीं करता कि मसीहियत बोझिल हो सकती है, क्योंकि वह स्तुति के शब्दों से इस भाग का आरम्भ करता है: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शांति का परमेश्वर है।'' ज़ोर परमेश्वर की सामर्थ और दया पर है। परमेश्वर का धन्यवाद हो, ''जिसका इस्तेमाल किसी पत्र के आरम्भ में नये नियम में दो और जगह हुआ है'' (इफिसियों 1:3; 1 पतरस 1:3)। परमेश्वर को धन्यवाद देने का एक परम्परागत यहूदी ढंग है (तुलना 11:31; लूका 1:68; रोमियों 1:25; 9:5)। जैसे अय्यूब ने पीड़ा का जवाब इन शब्दों से दिया, ''... यहोवा का नाम धन्य है'' (अय्यूब 1:21)। वैसे ही पौलुस अपने बोझों के अपने विवरण का आरम्भ धन्यवाद के शब्दों से करता है।

यदि हम चकित हैं कि पौलुस उन बोझों को जो उसके विश्वास के कारण उसे मिले थे, कैसे सह पाया, तो इसका उत्तर परमेश्वर के उसके दृष्टिकोण में मिलता है जो ''सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है'' (1:3)। ''शांति'' शब्द पौलुस की अन्य सभी पत्रियों की तुलना में 2 कुरिन्थियों अधिक बार आया है। 1:3-8 में यह शब्द कम से कम दस बार आया है। यह कोई संयोग नहीं है कि ईश्वरीय शांति के बारे में शब्द एक पत्र में इतनी बार आए जहां पौलुस मसीह की खातिर अपने दुखों का वर्णन सबसे विस्तार में करता है। पौलुस दु:ख में स्थिर रह सकता है क्योंकि परमेश्वर ''हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है'' (1:4)। उसके बोझ कभी भी अकेले नहीं उठाए गए।

बाइबल का एक पुराना विषय है कि परमेश्वर ''हमारे सब क्लेशों में शांति देती है।'' बाइबल कभी यह सुझाव नहीं देती कि विश्वास में किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं होती। पौलुस के मसीही बनाने पर प्रभु ने हनन्याह को बताया, ''मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा-कैसा दुख उठाना पड़ेगा'' (प्रेरितों 9:16)। पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को तबाही झेलनी पड़ती थी जिसे उन्हें शक होता था कि परमेश्वर या तो गायब है या छिप गया है। ऐसा एक समय आया जब इस्राएल हार गया था और उसके नगर खण्डहर बन गए। ''उसके सब यारों में से अब कोई उसे शान्ति नहीं देता। ... कोई उसे शान्ति नहीं देता है'' (विलापगीत 1:2, 9)। वह कहती है, ''इन बातों के कारण मैं रोती हूं; मेरी आंखों से आंसू की धारा बहती रहती है; क्योंकि जिस शान्तिदाता के कारण मेरा जी हरा-भरा हो जाता था, वह मुझ से दूर हो गया; ...'' (विलापगीत 1:16)।

दुख के पल में केवल परमेश्वर ही शांति दे सकता है। भजन लिखने वाला कहता है, ''तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है'' (भजन संहिता 23:4)। पवित्र शास्त्र के सबसे सुन्दर वचनों में से परमेश्वर अपने तबाह हुए लोगों से यह कहते हुए बात करता है, ''तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है, मेरी प्रजा को शान्ति दो, शान्ति! यरूशलेम से शान्ति की बातें कहो; और उस से पुकारकर कहो कि तेरी कठिन सेवा पूरी हुई है, तेरे अधर्म का दण्ड अंगीकार किया गया है: यहोवा के हाथ से तू अपने सब पापों का दूना दण्ड पा चुका है'' (यशायाह 40:1, 2)।

जब यशायाह उजड़े हुए लागों का सर्वेक्षण करता है जो वह उस दिन का पूर्वानुमान लगाता

है जब कोई ''सब विलाप करनेवालों को शान्ति'' देने आता है (यशायाह 61:2)। परमेश्वर को ''सब प्रकार की शांति का परमेश्वर'' के रूप में बताने के समय पौलुस उसके लोगों के इतिहास को याद कर रहा है। परमेश्वर ने पीड़ा को नहीं रोका था पर वह शांति का परमेश्वर था।

''शांति'' शब्द को इतना कमज़ोर और इतना बेचारा कर दिया गया है कि हम परमेश्वर के पौलुस के विवरण की विजयी आत्मा को ''अपने हर दुख में शांति देने वाले'' के रूप में नहीं देख पाते। शांति से हमें किसी दुखी व्यक्ति से तसल्ली की बात कहने के अपने प्रयास का सुझाव मिल सकता है। हम ''आरामदायक आमदनी'' और ''आरामदायक घर'' की भी बात करते हैं। बाइबल में ''आराम'' या ''शांति'' तरस भरी बात या स्तब्ध कर देने वाली बात से कहीं बढ़कर है। परमेश्वर की शांति, मज़बूत करने और उद्धार करने की उसकी सामर्थ है।

इस अर्थ का सुझाव निराश लोगों को नबी के इन शब्दों में सम्बोधन पर मिलता है, ''हे दुखियारी, तू जो आंधी की सताई है और जिस को शान्ति नहीं मिली, ...'' (यशायाह 54:11)। फिर वह कहता है, ''... मैं उसे ले चलुंगा और विशेष करके उसके शोक करने वालों को शांति दूंगा। ...'' (यशायाह 57:18)। इसलिए परमेश्वर की शांति बचाने और चंगाई देने की उसकी सामर्थ है।

एक स्पष्ट याद (1:8-11)

उस पल की जब परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आया पौलुस को साफ़ याद है। यह तब की बात है जब उसने एशिया में दुख सहा था (1:8)। उसे ''अत्यधिक बोझ'' था और वह ''जीवन से भी हाथ धो बैठा'' था। यह रूपक एक मालवाहक जहाज़ का सुझाव देता है जिसमें अधिक माल भर दिया गया था। ''निराशा'' से उसके इस समझ का संकेत मिला कि वह अपनी दुविधा में निकलने का रास्ता नहीं निकाल पाया। अपनी ओर से उसे कोई समाधान नहीं मिला। सेवकाई के सभी बोझ उठाना उसके लिए बहुत भारी हो रहा था। उसके मन में सेवकाई के शारीरिक और भावनात्मक अग्नि परीक्षाएं दोनों थीं: बीमारी, पीड़ा और कलीसियाओं की चिंता (तुलना 5:4; 11:28)। ऐसा कोई तरीका नहीं था कि वह उस बोझ को उठा सके। उसके लिए दब जाना पक्का था।

उस अनुभव से पौलुस को एक दृष्टिकोण मिला जिसने उसे परमेश्वर का वर्णन ''हमारे सब क्लेशों में शांति'' (1:4) देने वाले के रूप में करने में अगुआई दी। पौलुस पहले परमेश्वर की सामर्थ देने वाली उपस्थिति को समझने में नाकाम रहा था। पर निराशा के पल में पौलुस ने परमेश्वर के पुनरुत्थान की सामर्थ पर निर्भर होना सीखा न कि अपने आप पर (1:9)। परमेश्वर की शांति करुणामय शब्दों तक सीमित नहीं थी। यह वह सामर्थ थी जिसमें उसने खतरनाक जोखिम से निकालकर अपनी सेवकाई को जारी रखने की सामर्थ दी थी। तभी से पौलुस ने पाया कि ''वह आगे को भी बचाया रहेगा'' (1:10)।

प्रामाणिक मसीहियत में हमारे परमेश्वर के काम के लिए विभिन्न परेशानियों के सामने खड़ा होना शामिल है, परन्तु जैसा कि परमेश्वर हमें याद दिलाता है कि हम अपने ऊपर निर्भर नहीं होते। हमारा विश्वास उसके बारे में बताता है जो हमारे यह विश्वास करने पर कि हम ''अत्याधिक बोझ तले'' हैं। हमारे पास में आ जाता है। जैसा कि बाद में पौलुस कहता है, ''...

जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं'' (12:10)।

हमारी सेवकाई आम तौर पर इसलिए सफल होती हैं क्योंकि हम उस में जो ''जो हमें सब प्रकार की शांति देता है'' पौलुस जैसा विश्वास रखने को तैयार नहीं होते। कई घटनाओं में हम ने अपनी सेवकाइयां परमेश्वर की शांति देने वाली सामर्थ को महत्व न देकर अपने संसाधनों और चौथाई से चलाई हैं। प्रामाणिक सेवकाई में बोझ और ईश्वरीय शांति दोनों मिलते हैं। इनमें से किसी एक का न होना हमारे काम को निष्क्रिय कर देगा।

दूसरों के साथ शांति पाना (1:4-7)

परमेश्वर की शांति कई प्रकार से मिलती है। यह निराशा की स्थिति से पौलुस को निकालने से मिली। परन्तु पौलुस की शांति अन्य लोगों के द्वारा भी मिली है। वास्तव में 2 कुरिन्थियों (1:3-7) के आरम्भ में पौलुस की मुख्य बात यह है कि वह परमेश्वर की शांतिदायक उपस्थिति का प्रतिनिधि बन गया। उसे दूसरों को शांति देने के उद्देश्य के लिए परमेश्वर द्वारा शांति दी गई है: ''ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों'' (1:4)। वह जानता है कि केवल वही नहीं है जो निराश है; अन्य लोग भी ''उन क्लेशों को सहते'' हैं (1:6) जो उसने सहे, जैसे भावनात्मक, शारीरिक और आत्मिक। निश्चय ही उस सामर्थ के एक दूसरे को देने से जो उसे परमेश्वर की ओर से मिली है दूसरों को लाभ होना है। उन्हें अपनी परीक्षाओं को सहना आसान लग सकता था यदि कोई दूसरा उन्हें वह शांति देने के लिए वहां हो जो उसके पास पहले से ही हैं।

पौलुस को मालूम था कि परमेश्वर की उसकी हाल ही परीक्षाओं में कोई इच्छा है। उसने उस शांति के साथ दूसरों को शांति देनी थी जो उसे मिली थी (1:4)। 1:5 में एक चौंकाने वाली अभिव्यक्ति ने पौलुस मसीह के दुखों और उसकी शांति देनों के ''उमड़ने'' (NIV) की बात करता है। ''उमड़ने'' का रूपक यह सुझाव देता है कि कलीसिया ऐसा समुदाय है जहां ''कोई व्यक्ति टापू नहीं है।'' हमारे बोझ एक से दूसरे तक उमड़ते हैं। इसी प्रकार से शांति की ''सहभागिता और उमड़ना'' (1:7) है। यदि हम अपने बोझ लेकर खड़े हों तो आसानी से कुचले जा सकते हैं। परन्तु हमें कलीसिया में दूसरों के द्वारा मज़बूत किया जाता है जिनके पिछले अनुभव से हमें आशा मिलती है।

हमारी सेवकाइयां नाकाम हैं, यदि निराशा और चिंता के अपने व्यक्तिगत अनुभव को भारी पड़ने देते हैं। परमेश्वर की शांति हमें दूसरों के द्वारा मिलती है। पौलुस की तरह यदि हम ने निर्बलता के समय में परमेश्वर की सामर्थ को जान लिया है, तो इस समाचार को बांटा जाना चाहिए। यदि हम अपने आपको ''कुचले हुए'' देखते हैं तो हमें उनकी आवश्यकता है जो हमारे साथ उस शांति को बांट सकें जो उन्होंने परिश्रम से पाई है। एक का बोझ अन्त में पूरे समुदाय के लिए उपयोगी हो सकता है। जैसे पौलुस ने कहा, ''यदि हम क्लेश पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिए है'' (1:6)।

एक व्यक्तिगत अनुभव (7:5-16)

पौलुस दूसरों को केवल शान्ति देने वाला ही नहीं; बल्कि कई बार उसे भी उस शांति की

आवश्यकता होती थी जो उसे केवल कोई दूसरा मसीही दे सकता था। ऐसा भी समय आता था जब वह ''चारों ओर से क्लेश पाते थे; बाहर लड़ाइयां थीं, भीतर भयंकर बातें'' होती (7:5)। परेशान कलीसिया की स्थिति से स्पष्ट रूप में वह उसकी रातों की नींद उड़ जाती और वह भावनात्मतक रूप में बड़ा परेशान होता: ''मेरे मन में चैन न मिला, इसलिए कि मैं ने अपने भाई तीतुस को [त्रोआस में] नहीं पाया; सो उन से विदा होकर मैं मकिदुनिया को चला गया'' (2:13)। परेशान करने वाली कलीसिया ने पौलुस को दुखी कर दिया था। असंतोष और विद्रोह के अपने इतिहास के कारण यह ऐसी लगती थी कि लगता था कि पौलुस के परिश्रम बेकार जाएंगे।

कलीसिया की परेशानियां नई नहीं हैं। पौलुस के अपने संघर्ष के पीछे कुरिन्थुस की कलीसिया का खुला विद्रोह था जिसने उसे बड़ा दुखी किया था (2:5)। कुरिन्थुस की लगातार परेशानियों ने उसे निराश कर दिया था। उसने हार नहीं मानी थी, क्योंकि उसे आशा थी कि तीतुस कुरिन्थियों की ओर से उसके लिए कोई खुशखबरी लाएगा।

तीतुस से समाचार मिलना एक असाधारण आनन्द देने वाला था। कुरिन्थियों का शोक मन फिराव में बदल गया (7:9)। उनके शोक के कारण विश्वास का विरोध या त्यागना नहीं हुआ, क्योंकि यह ''परमेश्वर भक्ति का शोक'' था (7:10)। पौलुस आम तौर पर मसीही लोगों के मन फिराव की बात नहीं करता। यह आयत पौलुस के विश्वास का स्मरण करने वाली है कि हमारी असफलताएं हमें ''परमेश्वर भक्ति का शोक दिला सकती है जो मन फिराव का कारण बनते हैं।'' अत्याधिक कठिनाई देने वाले लोग बदल सकते हैं।

तीतुस का आना पौलुस के लिए नई शांति देने वाला था: ''तौभी दीनों को शांति देने वाले परमेश्वर ने तीतुस के आने से हम को शांति दी'' (7:6)। यह घटना उदाहरण है कि परमेश्वर के लोग एक दूसरे को शांति देने की कैसे मध्यस्थता करते हैं। पौलुस को शांति मिलती है जब तीतुस को कुरिन्थियों के मन बदलने से शांति मिलती है। कुरिन्थी लोग तीतुस को शांति दे सकते हैं, जो पौलुस को शांति दे सकता है। इस आयत में राहत और आनन्द भरा पड़ा है। मसीही जीवन के लिए भारी बोझों से कहीं बढ़कर है। पौलुस कहता है, ''अब मैं आनन्दित हूं ... इसलिए कि तुम ने उस शोक के कारण मन फिराया, क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था, कि हमारी ओर से तुम्हें किसी बात में हानि न पहुंचे'' (7:9)। वह तीतुस के आनन्द की बात करता है जिसका मन हरा भरा होने वाला है (7:13)।

इस भाग का समापन वह इन शब्दों से करता है, ''मैं आनन्द करता हूं, कि तुम्हारी ओर से मुझे हर बात में ढाढ़स होता है'' (7:16)। परेशान कलीसियाओं की चिंता यह निराशाहीन भावना दे सकती है कि कलीसिया के जीवन में एक के बाद एक पीड़ादायक संघर्ष है। परन्तु कलीसिया के जीवन में असीमित रूप में और भी बहुत कुछ है। लगाव का बंधन आनन्द और सामर्थ की यादगारियां देता है। यह बंधन आम तौर पर इतने मज़बूत होते हैं कि हमारे लिए अप्रिय पलों को भूल पाना असम्भव होता है। तीतुस में पौलुस के लिए कुरिन्थियों के ''लालसा,'' ''दुख'' और ''धुन'' की बात बताई (7:7)। कालांतर के अप्रिय पहलू तो भुला दिए गए थे पर उन्होंने यह कहीं नहीं ढूंढा था कि उनके मसीही समर्पण से ऐसा लगाव मिला जो साथी संघर्ष करने वाले होने से बना था। तीतुस भी, जो कुरिन्थियों को थोड़ा सा जानता था, संगति के नये

बंधन से प्रभावित हुआ था। पौलुस कहता है, ''और जब उस को तुम सब को आज्ञाकारी होने का स्मरण आता है, कि क्योंकर तुम ने डरते और कांपते हुए उस से भेंट की; तो उसका प्रेम तुम्हारी ओर और भी बढ़ता जाता है'' (7:15)।

सारांश

यदि मेरा अनुभव अधिक सक्रिय मसीही लोगों जैसा है तो हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मसीह के लिए सक्रिय समर्पण से असहमति के तनावपूर्ण पलों में अर्थात ऐसे समय में जाएंगे जब अगुओं की लगातार आलोचना होती है और उन समयों में जब बोझ बहुत भारी होता है। मुझे अन्य मसीही लोगों के साथ ईमानदार असहमतियों के समय और दूसरों के साथ काम करने से होने वाली निराशा का स्मरण आता है। परन्तु साथी मसीही हमेशा हिम्मत दिलाने वाले रहे हैं। उनमें से कई जिन्हें हम ने ढाढस देने की कोशिश की थी अन्त में हमें ढाढस देने वाले बने हैं! यदि पौलुस तीतुस के आने में परमेश्वर की शांति से कम कोई बात नहीं देख पाया, तो निस्संदेह हम देख सकते हैं कि हमारे लिए शुभसमाचार लाने वालों में हम परमेश्वर के काम को देख सकते हैं।

हो सकता है कि परमेश्वर हमें सेवकाई की चिंता से मुक्त करने के लिए पेशकश न करे, परन्तु वह हमें कई प्रकार से शांति देता है। वह इसे अच्छे मित्रों, अच्छे समाचारों और उस सामर्थ के द्वारा देता है जो हमें निराशा में हार मानने से रोकती है।